SHIVAJI COLLEGE

'RESEARCH JOURNEY' *International E- Research Journal*
Impact Factor - (SJIF) - 6.625 (2019),
Special Issue 259 (C) 'वैश्विक परिदृश्य में भारतीय भाषाएं, संस्कृति और साहित्य की पारस्पारिकता'
Peer Reviewed Journal
E-ISSN : 2348-7143
Jan. 2021

Impact Factor – 6.625 E-ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

January 2021

Special Issue 259 (C)

वैश्विक परिदृश्य में भारतीय भाषाएं, संस्कृति और साहित्य की पारस्पारिकता

Guest Editor -
Dr. Vanmala Govindrao Gundre,
Principal,
Yeshwantrao Chavan College, Ambejogai
Dist.- Beed

Executive Editors :
Dr. Arvind A. Ghodke
Dr. Gopal S. Bhosale
Dr, Ramesh M. Shinde
Prof. Dr. Murlidhar A. Lahade

Chief Editor : Dr. Dhanraj T. Dhangar

Our Editors have reviewed papers with experts' committee, and they have checked the papers on their level best to stop furtive literature. Except it, the respective authors of the papers are responsible for originality of the papers and intensive thoughts in the papers. Nobody can republish these papers without pre-permission of the publisher.

- Chief & Executive Editor

SWATIDHAN INTERNATIONAL PUBLICATIONS
For Details Visit To : www.researchjourney.net

*Cover Photo (Source) : Internet

© All rights reserved with the authors & publisher

Price : Rs. 1000/-

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

'RESEARCH JOURNEY' *International E- Research Journal*
Impact Factor - (SJIF) - 6.625 (2019),
Special Issue -259 (C) 'वैश्विक परिदृश्य में भारतीय भाषाएं, संस्कृति और साहित्य की पारस्परिकता'
Peer Reviewed Journal
E-ISSN : 2348-7143
Jan. 2021

अनुक्रमणिका

अ.क्र.	शीर्षक	लेखक/लेखिका	पृष्ठ क्र.
1	तृतीय लिंग संवेदाना के भाष्य	डॉ. प्रिया ए.	07
2	अवधी लोकगीतों की धर्म एंव दर्शनमूलक दृष्टि	डॉ. गरिमा जैन	11
3	हिंदी कहानियों में आदिवासी विमर्श	डॉ. मालती शिंदे - चव्हाण	20
4	समकालीन हिंदी कथा साहित्य में स्त्री – विमर्श कि चुनौतियाँ	डॉ. दीपक पवार	24
5	स्त्री के संघर्ष की व्यथा (सुरेन्द्र वर्मा के 'सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक' नाटक के विशेष संदर्भ में)	प्रो. ए. जे. बेवले	28
6	बदलते परिदृश्य में स्त्री का अस्तित्व	डॉ. संगीता लोमटे	32
7	किसान का आदर्श मानविय रूप (सुजान भगत के संदर्भ में)	डॉ. शिवाजी वैद्य	38
8	भीष्म साहनी के नाटको में स्त्री शोषण के विविध आयाम	सोनम सिंह	41
9	वैश्विक साहित्य में प्रवासी हिंदी साहित्य	प्रा. ज्ञानेश्वर बगनर, डॉ. एस. डी. लांडे	44
10	हिंदी उपन्यासों में कृषक चेतना	डॉ. विजय वाघ	47
11	हिंदी दलित साहित्यकार मोहनदास नैमिशराय के उपन्यासों में अम्बेडकरवादी विचारधारा	डॉ. संगीता उप्पे	50
12	स्त्री विमर्श - असहज स्थिति : यातना और संघर्ष का द्वंद्व	डॉ. रश्मि पाण्डेय	58
13	हिंदी दलित कथा साहित्य में नारी	डॉ. रमेश कांबळे	62
14	अंतिम दशक में हिंदी उपन्यासों मे स्त्री विमर्श	डॉ. दत्ता साकोळे	65
15	सामाजिक प्रतिष्ठा में बेचैन नारी	डॉ. अरविंद घोडके	68
16	हिंदी उपन्यासों में दलित विमर्श	आशा फड	71
17	सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की कविताओं में समकालीनता	डॉ. नंदकिशोर चिताडे	74
18	अज्ञेय की कविताओं में सामाजिकता	डॉ. प्रकाश खुळे	78
19	सभ्यता, संस्कृति और साहित्य	डॉ. अर्चना परदेशी	82
20	भारत और विदेशों में ट्रांसजेंडर की स्थिति : विशेष संदर्भ 'मैं हिजड़ा...मैं लक्ष्मी'	अमर आलदे	87
21	किसान विमर्श	डॉ. विनोद जाधव	91
22	नारायण सुर्वे की कविता 'अनुवाद के पक्ष'	डॉ. प्रकाश कोपर्डे	96
23	समकालीन भारतीय विमर्श की वैश्विक पारस्परिकता : स्त्री विमर्श	डॉ. राजश्री भामरे, मेघराज खरोटमल	102
24	किन्नर समाज को प्रेरणा देती आत्मकथा 'मै हिजडा मै लक्ष्मी'	डॉ. बायजा कोटूळे	105
25	मिडीया और महिलाएँ	डॉ. सोमा गोंडाणे	108
26	किन्नर विमर्श : दशा एवं दिशा	डॉ. राजश्री भामरे	111
27	किन्नर - जीवन या अभिशाप	लालमोहन राम	116
28	'क्या मुझे खरीदोगे?' : भारतीय स्त्री की विद्रोह कथा	डॉ. सन्मुख मुच्छटे	121
29	विश्व साहित्य में प्रवासी हिंदी साहित्य का योगदान	डॉ. मुक्ता अग्रवाल	125
30	विश्व साहित्य में हिंदी साहित्य का योगदान (उपन्यास तथा कहानी साहित्य के संदर्भ में)	डॉ. विक्रमसिंह पवार	128
31	'आयदान' में व्यक्त दलित क्रांती चेतना	माधवराव जोशी	132
32	किन्नरो में निहित धार्मिक एकता एवं सांप्रदायिक सद्भाव	डॉ. कॅप्टन बाबासाहेब माने	136
33	भारतीय संस्कृति और साहित्य	कु. राजकन्या भगत	141

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

'RESEARCH JOURNEY' *International E- Research Journal* | E-ISSN : 2348-7143
Impact Factor - (SJIF) – 6.625 (2019), | Jan. 2021
Special Issue -259 (C) 'वैश्विक परिदृश्य में भारतीय भाषाएं, संस्कृति और साहित्य की पारस्पारिकता'
Peer Reviewed Journal

34	वर्तमान परिदृश्य में भारतीय संस्कृति और सभ्यता की प्रासंगिकता	चंद्रशेखर झा	144
35	वैश्विक परिदृश्य में हिंदी भाषा एवं भारतीय संस्कृति के विविध आयाम	डॉ. हेमु चौधरी	149
36	समकालीन भारतीय आत्मकथा साहित्य में स्त्री विमर्श (कस्तुरी कुंडल बसै, गुडिया भीतर गुडिया, पिंजरे की मैना)	रोहिणी बनसोडे	153
37	मैत्रयी पुष्पा कृत 'अगनपाखी' उपन्यास में संघर्षरत नारी	[redacted]	157
38	रेडियो के विविध कार्यक्रम और समाज	डॉ. डी. आर. तांदळे	161
39	हिंदी साहित्य में किसान विमर्श	डॉ. सूर्यकांत शिंदे	164
40	कृषिक्षेत्र आणि संस्कृती	डॉ. केशव तिडके	168
41	Ecofeminism in Indian Novels in English.	Dr. Ahilya Barure	171
42	Toru Dutt : A Voice Representative of Indian Life and Culture as a Whole	Dr. Jyoti Agrawal	174

Our Editors have reviewed papers with experts' committee, and they have checked the papers on their level best to stop furtive literature. Except it, the respective authors of the papers are responsible for originality of the papers and intensive thoughts in the papers. Nobody can republish these papers without pre-permission of the publisher.

- Chief & Executive Editor

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) – 6.625 (2019),
Special Issue -259 (C) 'वैश्विक परिदृश्य में भारतीय भाषाएं, संस्कृति और साहित्य की पारस्परिकता'
Peer Reviewed Journal
E-ISSN : 2348-7143
Jan. 2021

मैत्रयी पुष्पा कृत 'अगनपाखी' उपन्यास में संघर्षरत नारी

[redacted]
सहयोगी प्राध्यापक,
हिंदी विभागाध्यक्ष,
शिवाजी महाविद्यालय, हिंगोली, जि. हिंगोली (महाराष्ट्र) - ४३१५१३
Email- wagh.sudhir001@gmail.com

हिन्दी साहित्य में इक्कसवीं सदी की महिला साहित्यकारों ने समस्त विषयों को छुआ किंतु स्त्री-संवेदना और स्त्री-जीवन उनके सृजन के केंद्र में रहा । साहित्य मानवीय संवेदना के चिंतन की उत्तम अभिव्यक्ति है। स्त्री तो संवदना का मूर्त रूप है अर्थात कोई भी साहित्य स्त्री बिना पूर्ण नहीं है। इसलिए स्त्री और साहित्य का संबंध अखंड है। स्त्री ने सामाजिक, नैतिक एंव सांस्कृतिक रूप में भी साहित्य को पूर्ण योगदान प्रदान किया है। समकालीन साहित्य में स्त्री को लेकर इतना कुछ सृजन किया गया कि स्त्री- विमर्श का दौर ही प्रारंभ हो गया। जहाँ अन्य श्रोत्रांओं की तरह साहित्य में भी पुरूषों का वर्चस्व था, वहाँ महिलाओं ने बडी तेजी से साहित्य में इस तरह से कदम रखा कि वह छा ही गयी। इन महिला साहित्यकारों ने स्त्री जीवन के विविध पहलुओं, परिस्थितिओं को पूरी जिम्मेदारी के साथ उकेरा। कृष्णा खत्री के अनुसार "सबसे बडी बात, भोगनेवाली भी स्त्री और अभिव्यक्ति करनेवाली भी स्त्री। यह भोगा सच उपभोगता की जबानी अभिव्यक्त हुआ तो साहित्य में नएपन का, ताजगी का और प्रखरता का पदार्पण हुआ और एक जीती जागती क्रांति ने जन्म ले लिया।" इक्कीसवीं सदी की बदलती राष्ट्रीय, सामाजिक व आर्थक स्थितियों तथा शिक्षा के प्रचार-प्रसार ने स्त्री जीवन को अत्याधिक प्रभावित किया है। इसलिए स्त्री-विमर्श चिंतन ने साहित्य में विशेष स्थान प्राप्त किया है।

सदियों से स्त्री कुपोषण, अत्याचार,अन्याय का शिकार होते चली आयी है। समाज में जहा भी दमन है, शोषण है, अत्याचार है स्त्री साहित्य उसके विरोध में खडा हुआ। अब दो तरीके से स्त्रीवादी साहित्य सजृन किया जा रहा है- एक सामाजिक शोषण के विरूध्द और दुसरा देह-भोग के विरूध्द। "आज का सृजन नारीवादी सृजन नही, नारी केंद्रित सवालों को वडे आशयों में लानेवाला नारी की मुक्ति को साधारण जन की सार्वदेशिक मुक्ति से जोडनेवाला, पर बेहतर मानवीय और तर्कसंगत सामाजिक संरचना में नारी को उसकी सही हैसयित के साथ प्रतिष्ठा देने की कोशिश में लगा नारी अस्मिता का प्रामाणिक सृजन है"। इतना निश्चित है कि इक्कीसवीं सदी के महिला साहित्यकारों ने अपने समय और सामाज की नब्ज को गहरी संदवेदना के साथ पकडा है।

मैत्रयी पुष्पा का उपन्यास 'अगनपाखी' रचना की नायिका भुवनमोहिनी को असहाय होने के कारण विनम्र दिखाया है, किंतु भीतर से किस ताकत का सामना करती है यह दिखलाया है। भुवनमोहिनी, पत्नी स्वर्गीय विजयसिंह वल्द स्वर्गीय दुरजयसिंह, निवासी ग्राम विरारा, जिला झाँसी यह दावा करती है कि उसके पति के हिस्से की चल-अचल संपत्ति की हकदार है। उसके पति के साथ उसे मृतक दिखाया और उसके जेठ कुँवर अजयसिंह ने संपत्तीपर उसके अकेले का हक वरकरार रखा है। क्योंकि स्वयं विजयसिंह को कोई संतान नहीं। भुनमोहिनी की कचहरी से अर्ज है कि अपने पति की जायदाद का हक उसे सौंपा जाये। वह कुँवर अजयसिंह की हकदारी पर सक्त ऐतराज करती है। वैसे देखा जाय तो इस अन्याय में भुवनमोहिनी को अपने हक के लिए लड़ना पड़ा। वह किसी भी प्रकार से स्वतंत्रपूर्वक जीवन व्यतीत नहीं कर पाती है। भुवनमोहिनी की माँ एक साहसी और कर्मठ स्त्री है। पति की मृत्यु के वाद घर की सारी जिम्मेदारी संभालती है। मुन्नी अर्थात् भुवनमोहिनी की वडी बहन सहृदय एवं संवेदनशील नही। जब उसे पता चला की भुवन के विवाह के रुप में उसके साथ छल किया गया तो वह दुखी और क्रोधित हुई। भुवन की जेठानी अर्थात् अजयसिंह की पत्नी अपने

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal | E-ISSN : 2348-7143
Impact Factor - (SJIF) - 6.625 (2019), | Jan. 2021
Special Issue -259 (C) 'वैश्विक परिदृश्य में भारतीय भाषाएं, संस्कृति और साहित्य की पारस्पारिकता'
Peer Reviewed Journal

पति के हर काम में सहयोगिनी है। काम अच्छा हो या बुरा, अपने पति का साथ देती है। देवर विजयसिंह की मौत के बाद भुवन को सती करा कर पूरी जायदाद हडपने की योजना का समर्थन करती है। ऐसी सारी परिस्थितीयाँ भुवन के सामने आती है किंतु अत्याधिक साहसी बनकर संघर्ष कर प्रस्तुत उपन्यास में दिखाई गयी है।

मैत्रयी पुष्पा ने अपने इस उपन्यास में यह कहा है कि खुद को भुवन के रुप में रखकर अपने आप में लड रही थी। और परिवर्तन के लिए विद्रोह तक जाने में कभी चार कदम बढती तो कभी दो कदम पीछे हटती। परंपरा एवं रुढी के प्रति नारी का विद्रोह पुरुष प्रताडना से नारी में उभरी अकेलेपन की भावना, गाँवों में दारिद्रता आपसी बैर, आर्थिक दुर्बलता के कारण स्त्रियों का शोषन आदि अनेक विषय इस उपन्यास में आये है। आज की स्त्री परम्पारिक संस्कारों में जकडी है, परावलम्बी है आश्रित है ग्रामीण क्षेत्रों में अब शिक्षा व जानकारी आने से स्त्रिया में अन्याय के प्रति जागृति आयी है। स्त्रिया पूरे समाज, सामाजिक मान्यताएँ, रुढियों रीति रिवाजो, वर्जनाए, स्त्रियों को सदियों से शोषित किया गया है। लेकिन 'अगनपाखी' में लेखिकाने भुवन के ,माध्यम से अपने लक्ष्य का हासिल करके ही छोडा है, भुवन एक पुनर्जन्म याने इक्कीसवी सदी की नारी का ही जन्म है।

मैत्रयी पुष्पा का 'अगनपाखी' उपन्यास लघु उपन्यास स्मूति दंश का नया सस्करण है। इसमें पुरुष समाज द्वारा स्त्री पर किये गये अत्याचार का अंकत है। कथा की मार्मिकता पाठकों को अश्रुपूरित करती है। 'अगनपाखी' में नारी की व्यथा पीडा और समर्पन का चित्रण है। स्वार्थ परक पुरुष स्त्री की असहायता का लाभ उठाकर अत्याचार करता है। इसका उदाहरण नायिका भुवन और जीजा बरजारसिंह है। पुत्र चन्दर की नौकरी के लिए जीजी भुवन की शादी विराटा के पागल पुत्र विजयसिंह से करती है। सम्पति के लिए परिवार में झगडे पत्नियों और विधवाओं की हत्या होती है। इस उपन्यास में मानवीय सम्बन्धों की जटिलता का प्रस्तुत किया है। "अब यह एक नया उपन्यास है। हो सकता है पात्रों के नाम और स्थान वही हो मगर अब वहाँ का इसमें कुछ भी नहीं। अगर मै पात्रों स्थानों के नाम बदल देती तो भी कोई अन्तर नहीं पडता। अगनपाखी उतना ही नया होता है।"[1] स्मृतिदंश की भुवन भावुकता के कारण मर जाती है, पर अगनपाखी की भुवन अन्याय के प्रति विद्रोह करती है।

'अगनपाखी' उपन्यास शीतलगढी बरुआसागर, विराटा ग्रामांचल के परिवेश को बहुत सजीवता के साथ प्रस्तुत करती है। यह कथा भुवन और उसकी वहन के बेटे चन्दर के इर्द -गिर्द घूमती है। नाना की मृत्यू के बाद चन्दर अक्सर अपने ननिहाल शीतलगढी में आता रहता है। जो अपनी मौसी भुवन के हम उम्र है, इसलिये दोनों का अधिक समय साथ गुजरता है, साथ-साथ खेलते है गाते एक दिन जवानी की दहलीज पर आकर खडे हो जाते है। दोनों का एक साथ अधिक समय तक साथ रहने से एक दूसरे के प्रति शारीरिक आकर्षन भी वढ जाता है। जो एक दिन शारीरिक सम्वन्ध तक पहुँच जाता है, मगर नानी उन्हें पकड लेती है और स्वंय आत्महत्या करने लगती है, इस परचन्दर उन्हें किसी तरह शेक लेना है और अपने कुकर्म का अहसास करता है, और अपराध वोध से भग यह सोचता है - "सुनता आया हूँ कि मौसी माँ समान होती है। नाते भूल गया कि जवानी में अन्धा हो गया"[2] मौसी वहन के वेटे चन्दर के साथ शारीरिक सम्वन्ध करीबियो का वृतान्त है। 'अगनपाखी' उपन्यास की भुवन एक ऐसी नारी है जिसका विवाह एक अर्ध विक्षिप्त व्यक्ति कुंवर विजय सिंह से कर दिया जाता है। भुवन न चाहते हुए भी अपने पति के साथ रहती है। वह कहती है- "जिज्जी, वह कुठिया की तरह भी सुख आन्द कहाँ जानता है कि मैं उसे सुख आनंद जुराऊँ। खुद को दुख ही देता रहता है। सर्दी की राज पुरी की पुरी हाथ पाँच धोते निकाल देता है। कहता है हर जगह किडे है, हर जगह खुन है"[3] ऐसे अनमेल

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) – 6.625 (2019),
Special Issue -259 (C) 'वैश्विक परिदृश्य में भारतीय भाषाएं, संस्कृति और साहित्य की पारस्पारिकता'
Peer Reviewed Journal
E-ISSN : 2348-7143
Jan. 2021

विवाह को निभाने को प्रयास करने के बाद जब वह सुख की कोई किरण नहीं पाती है तो वह अपनी माँ से ससूराल न जाने की जिद्द करती हैं।

भुवन अपने जीवन से समझौता करने का तैयार नहीं है अर्द्ध विक्षिप्त पति कुंवर विजयसिंह के साथ रहने के बजाय अपने मायके में रहना चाहती है। क्योंकि गुलामी का सुख चेतना संपन्न भुवन को नहीं भाता है। उसके इस संघर्ष में उसकी माँ उसका साथ नहीं देती है क्योकि हमारे समाज में यह मान्यता है कि एक बार लडकी की शादी हो जाती है तो उसकी अर्थी भी ससुराल से ही उठनी चाहिए। भुवन की माँ इस विचारधारा को मानती है और वह कहती है - "ते कुंवारेपन को सपने देख रही है बेटा गया समय अपनी देह से लिपटा है क्या? बिटिया की जात बाप के आँगन में तितली बनकर खेलती है, गाय की तरह विदा होती है व्याह पीछे कुत्ता की जौन निभानी पडती है, भौको, चीखो तो सासरे पच्छदारी में ही "[4] इस प्रकार स्त्री संघर्ष में उसे अपने मायके में आसरा नहीं मिलता है क्योकि उसके मायके वाले लोग घर में लडकी बैठाने की बदनामी नहीं लेना चाहते है। मैत्रयी पुष्पाने अपने इस उपन्यास कें द्वारा रीतिरिवाज व धर्म के नाम पर विधवा स्त्री को किस प्रकार शोषित किया जाता है इसे दर्शाया है। यह प्रथा सती प्रथा इस प्रथा के अनुसार एक स्त्री अपने पति के मरने पर स्वंय अपने शरीर को संहर्ष त्याग देती है। सती होना हिन्दू समाज में गौरव की बात मानी जाती है, सती एक ऐसी प्रथा थी जिसमें विधवा स्त्री को अपने पति की चिता में जिन्दा मार दिया जाता था। कहा जाता था कि यह आत्मदाह उसकी स्वेच्छा से हे, पर जिस समाज में स्त्री के अपने जीवन में घर से बाहर जाने प्रेम या विवाह करने और घर के किसी महत्वपुर्ण फैसले का निर्णय लेने को अधिकार नहीं, फिर सती होने का निर्णय कैसे उसका था।

इस उपन्यास में स्त्री को घर के अन्दर किस तरह नियन्त्रित किया जाता है और बचपन से ही उसे एक ही साचें में डाला जाता है भुवन के माध्यम से प्रकाश डाला गया है। भुवन के पिता न होने के कारण और बचपन के साथ लडकों के खेल खेलती है जो नानी यानी भुवन की माँ को अच्छा नहीं लगता है चन्दन कहता है - "भुवन का पतंग उडाना नानी को फूटी आँखों नहीं आया। साइकिल मिली, उसने चलाई गिरने से जादा सीख नहीं पाई कि नारी भगवानदास से लडने पहूँच गयी।"[5] नानी ने उसे पढने से भी बैठा दिया क्योकि भुवन ने मास्टर से बहस कर ली थी और वह भुवन को घर में रखना चाहती थी। उसकी मदद चाहती थी साथ ही भुवन के खुले व्यवहार की नियान्त्रित भी करना चाहती थी। तभी तो चन्दर कहता है - "नानी ने उसे इस बात के लिए पिटा, गालियों दी। भट्टी छोत, बाप भइया नहीं तो तू ऐसी मर्दनमार भई जा रही है"[6] नानी भुवन को साँचो में ढाल रही है जैसे वह स्वंय ढल चुकी है क्यो कि आदर्श स्त्री वही जो पितृसत्ताक नैतिक प्रतिनामी को पूरी निष्टा से आत्मसात करती हुई पीढी दर पीढी उसे आगे बढाती है। उपन्यास में लेखिका ने जिलाझासी के विराट गाँव और उसके इर्द- गिर्द के प्रदेश का ग्रामांचल का यथार्थ चित्रण किया है। गाँव में अन्य समस्याओं के साथ - साथ जाति व्यवस्था और वर्गगत झगडे भी मुख्य है। गाँवों में जितने स्नेहभाव में अधिकता होती है उससे बढकर आपसी वैर में तीवृता विधमान होती है। घायल आदमी पीढियों तक अपना दर्द भूला नहीं पाता। आपसी बैर के मूल में जर, जमीन और जोरु ही कारण ने अजयसिंह के साथ बैर का कारण इस प्रकार बताया है - "इसने (छोटे कुंवर विजयसिंह ने) हमारी मजूरनी खेत में गिरा ली। देखा नहीं कि मजूरनी के संग मजुर भी है, हमारे पिता जी ने इशारा दिया सो अच्छी तरह कुचला। ठौर - कठौर मारा, मर्दानगी खत्म कर दी। बस तभी से बैर चला आ रहा है"[7] इस प्रकार स्पष्ट है कि बदलते हुए युग में व्यक्ति की सहनशीलता खत्म होती चली आई है। आज व्यक्ति आदर्श, समय के खोखलेपन की परतो को खोलकर सिर्फ निजीपन की खोज में अपने अस्तित्व को स्थिर बनाने की कोशिश में है यही इक्कीसवी शदी की निशानी है।

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) – 6.625 (2019),
Special Issue -259 (C) 'वैश्विक परिदृश्य में भारतीय भाषाएं, संस्कृति और साहित्य की पारस्पारिकता'
Peer Reviewed Journal
E-ISSN : 2348-7143
Jan. 2021

अत: प्रस्तुत उपन्यास में स्त्री के प्रति समाज की अस्थिर दृष्टि का पता चलता है। कहना होगा कि इक्कीसवीं सदी के स्त्री साहित्यकारों ने कुछ तीखे, ज्वलंत प्रश्नों, अंतविरोधों और विरोधाभासों को अपने उपन्यास में प्रस्तुत किया है जिससे स्त्री-सृजन की एक अलग पहचान बनने लगी है। इनकी रचनाओं में स्त्री के अधिकारों के प्रति सजगता के साथ-साथ समाज की अन्य समस्याएँ भी उद्घाटीत हुई दिखाई देती है। इनकी सृजनात्मक आक्रमकता, तीखा और पितृक समाज की कडी आलोचना से परिपूर्ण है। यह परिवर्तन इक्कीसवी सदी में सर्वाधिक दृष्टित हुआ। जो स्त्री-लेखन सिर्फ घर, परिवार, बच्चे, स्त्री-पुरूष बिखराव तक सीमित था उस स्त्री-लेखन की आंतरिक और बाहरी दुनिया में इस सदी में काफी बदलाव आया है।

संदर्भ :-

1. मैत्रयी पुष्पा - अगनपाखी,वाणी प्रकाशन, दिल्ली,प्रथम संस्करण-2002,- पृ.5-6
2. वही - पृ. 17
3. वही - पृ. 72
4. वही - पृ. 73
5. वही - पृ. 35
6. वही - पृ. 36
7. वही - पृ. 140

T.C.
Professor
Shivaji College, Hingoli.
Tq & Dist.Hingoli.(M.S.)
PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli